विद्यार्थी आचार संहिता

यह सर्व विदित है कि शिक्षण-संस्थायें विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि करके उन्हें शिक्षित, सभ्य, अनुशासित, सुसंस्कृत एवं अच्छे नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। राजकीय कन्या महाविद्यालय, अजमेर भी ऐसा ही एक शिक्षण संस्थान है। अतः इस महाविद्यालय की गौरवमयी परम्पराओं के अनुसार प्रवेशार्थियों से निम्न आचार संहिता के पालन की अपेक्षा की जाती है।

1. विद्यार्थियों को निर्धारित समय पर अपनी-अपनी कक्षाओं में उपस्थित रहना चाहिये। कक्षाओं के बाहर घूमते हुये अध्यापन में व्यवधान उत्पन्न नहीं करना चाहिये।
2. वाहनों यथा साईकिल, स्कूटर या अन्य को इधर-उधर न रखकर महाविद्यालय के साईकिल स्टेण्ड पर ही रखना चाहिये।
3. सार्वजनिक वाहनों की सुविधायें नियमानुसार प्राप्त करनी चाहिये।
4. विभिन्न सूचनाओं के लिये प्रतिदिन सूचना पट्ट प्रदर्शित सूचना/आदेश की जानकारी प्राप्त करना स्वयं विद्यार्थी का उत्तरदायित्व होगा। प्रदर्शित सूचनाओं को फाड़ना, बिगाड़ना व इन पर कुछ लिखना दण्डनीय अपराध है।
5. पुस्तकालय एवं वाचनालय का अधिकतम सदुपयोग करना चाहिये। रिक्त कालांशों में महाविद्यालय परिसर में इधर-उधर घूमने के बजाय पुस्तकालय एवं वाचनालय में बैठकर ज्ञानार्जन करना चाहिये।
6. विद्यार्थियों को महाविद्यालय में अपना परिचय-पत्र सदैव साथ रखना आवश्यक होगा।
7. महाविद्यालय परिसर को स्वच्छ बनाये रखने में सहयोग देना चाहिये।
8. उपलब्ध पाठ्येत्तर गतिविधियों में अधिक से अधिक हिस्सा लेना चाहिये।
9. राष्ट्रीय सेवा योजना एवं रोवर क्रू के सदस्य बनकर विभिन्न राष्ट्रीय कार्यक्रमों के सम्पादन में सहयोग देना चाहियें।
10. महाविद्यालय की सम्पति को नुकसान पहुँचानादंडनीय है।
11. महाविद्यालय में अध्ययन के दौरान मोबाइल का उपयोग दंडनीय है।
12. कार्यालय सम्बन्धी कार्य निर्धारित खिड़कियों पर पंक्तिबद्ध रहकर करने चाहिये।
13. कार्यालय, अध्ययन कक्ष, प्राध्यापक कक्ष, प्राचार्य कक्ष, एवं पुस्तकालय में पूर्व अनुमति लेकर ही प्रवेश करना चाहिये, तथा सम्बन्धित पक्षों के साथ भद्र एवं शालीन व्यवहार करना चाहिये।
14. उपयोगी सुझाव प्राचार्य/उपाचार्य को प्रस्तुत करने चाहिये।
15. परिसर में गुटखा, तम्बाकू, धुम्रपान एवं नशीले पदार्थो के सेवन निषेध है।
16. दीवारों पर पान का पीक थूकना दण्डनीय कृत्य है।
17. अपने से बड़ों एवं साथियों को उचित सम्मान देना चाहिये।
18. महाविद्यालय के विकास में अभिभावकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः विद्यार्थियों को अपने-अपने अभिभावकों से महाविद्यालय के विकास कार्यो में तन, मन, धन से सहयोग करने का आग्रह करना चाहिये।
19. रैगिंग सम्बन्धी गतिविधियों से दूर रहें।